राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के उपलक्ष्य में

एक दिवसीय राष्ट्रीय भौक्षिक नीतियां एवं क्रियान्वयन कार्यक्रम संचालन की रुपरेखा

दिनांकः 11 नवम्बर, 2022– 11:30 am to 01:30 pm

कार्यक्रम	क्रियान्वयन	समय
स्वागत/अतिथि परिचय	निदेशक, प्रो0 पी0के0 स्टालिन	**11:30- 11:40 am**
विषय प्रवर्तन	श्री परविंद कुमार वर्मा	**11:40 -11:50 am**
मुख्य वक्ता उद्बोधन	प्रो0 पी0के0 साहु पूर्व कुलपति, इलाहाबाद वि ववविद्यालय, प्रयागराज	**11:50 – 01:05pm**
अध्यक्षीय उद्बोधन	मा0.कुलपति, प्रो0 सीमा सिंह	**01:05 - 01:25 pm**
धन्यवाद ज्ञापन	प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय	**01:25 – 01:30 pm**
राष्ट्रगान		
कार्यक्रम संचालन	डॉ0 संजय कुमार सिंह	

"राष्ट्रीय शिक्षा दिवस"

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षा विद्याशाखा के तत्वाधान में दिनांक 11.11. 2022 को पूर्वाह्न 11.30 बजे से 01.30 बजे तक विश्वविद्यालय के तिलक शास्त्रार्थ सभागार में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो0 पी0के0 साहू, पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मा0 कुलपति, प्रो0 सीमा सिंह जी द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता, माननीय कुलपति जी और सभागार में बैठे अन्य सदस्यों का वाचिक स्वागत प्रो0 पी0 के0 स्टालिन, निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा किया गया। कार्यक्रम का विषय प्रर्वतन श्री परविन्द कुमार वर्मा जी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो0 पी0 के0 साहू जी ने शिक्षा दिवस के अवसर पर "मौलाना अबुल कलाम आजाद" को नमन करते हुए उनके जीवन के बारे में प्रकाश डाला। साथ ही उनके मुख्य वक्तव्य में आजाद जी के धर्म निरपेक्ष विचारधारा के साथ उनके स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर देश के स्वातन्त्रय काल तक शिक्षा में दिये गये योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षार्थी के स्वायत्तता, स्वतन्त्रता को मुक्त विश्वविद्यालय के उदद्श्यों से जोड़ते हुए शिक्षक के दायित्यों के बारे में भी बताया। साथ ही उन्होंने बताया की निजता एवं भाषा की स्वतन्त्रता यदि विद्यार्थी में नहीं है तो उसके स्व का क्षय हो जाता हैं। इसी क्रम में मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए कहा। साथ ही शिक्षार्थी के स्वालम्बता की बात कही।

मुख्य वक्ता ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालय की मूलभूत अवधारणा मुक्तता, स्वायत्तता, उनमुक्तता, एक वह्द रुप में होता है। मुक्त विश्वविद्यालय की बहुविधायें है। किसी एक मानक को लेकर नहीं चल सकते हैं। संरचनात्मक उपागम के अवधारणा को एक व्यक्ति के आधार पर बहुलता एवं विभिन्नता को स्वायतता के करीब बताया। विद्यार्थी की समस्या को हल न करके उसे हल करने योग्य बनाना एक शिक्षक का दायित्व बताया जिसके लिए उसे नये नये विद्याओं को सिखते रहना चाहिए।

कार्यक्रम अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति, प्रो0 सीमा सिंह जी ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को नमन करते हुए कहा कि शिक्षा में हम अपने मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शिक्षा पर कक्षा कक्ष शिक्षण न होने के कारण हम शिक्षक शिक्षार्थी के संवेदनाओं को समझने से वंचित रह जाते हैं। जोकि एक प्रकार से मुक्त विश्वविद्यालय की सीमाऐं है। समाज में जीने के लिए शिक्षा हमें बहूत कुछ देती है। जिसमें मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक एवं सामाजिक, अध्यात्मिक शक्तियां प्रदान करती है। साथ ही कहा की मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से 18 वर्ष से लेकर जीवन पर्यन्त तक शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 संजय कुमार सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा द्वारा किया।

मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

11 नवम्बर, 2022

मुविवि में रजत जयंती वर्ष में हुआ व्याख्यान का आगाज

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करती हुई माननीया कुलपति प्रो0 सीमा सिंह जी एवं प्रो0 पी0के0 साहू जी

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत **राष्ट्रीय शिक्षा दिवस** के अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्याशाखा के तत्वावधान में दिनांक 11 नवम्बर, 2022 को पूर्वाह्न 11:30 बजे विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में **विशिष्ट व्याख्यान** का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 पी0 के0 साहू जी, पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो0 सीमा सिंह जी ने की।

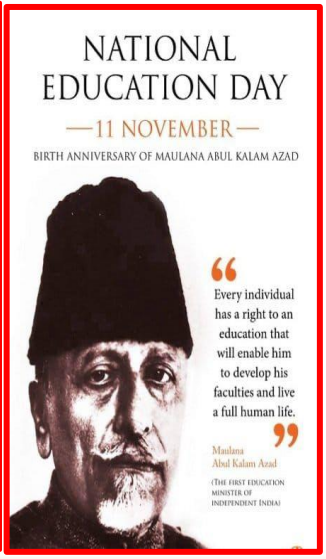

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, डॉ0 संजय कुमार सिंह एवं मंचासीन माननीय अतिथिगण

प्रारंभ में मुख्य अतिथि इविवि के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी0 के0 साहू एवं मा0 कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह तथा अन्य अतिथियों ने रजत जयंती वर्ष में वर्ष पर्यंत चलने वाले कार्यक्रमों के अंतर्गत पहले व्याख्यान का उद्घाटन दीप प्रज्वलन करके किया। शिक्षा विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर पी0 के0 स्टालिन ने अतिथियों का स्वागत तथा परविन्द वर्मा ने विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ संजय कुमार सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर पी0 के0 पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

स्वागत एवं सम्मान

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो० पी० के० साहू जी को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर उनका सम्मान करते हुए प्रो० पी० के० पाण्डेय

माननीया कुलपति प्रोफ़ेसर सीमा सिंह जी को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर उनका सम्मान करते हुए निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, प्रो० पी० के० स्टालिन

निदेशक,
शिक्षा विद्याशाखा,
प्रो० पी० स्टालिन
को
पुष्पगुच्छ
एवं
अंगवस्त्र
भेंट कर
उनका सम्मान
करते हुए
प्रोफ़ेसर, शिक्षा,
प्रो० छत्रसाल सिंह

माननीय अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करते हुए निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, प्रो0 पी0 स्टालिन

विषय प्रवर्तन करते हुए असि. प्रोफेसर श्री परविन्द्र वर्मा

स्वायत्तता के बिना विकास संभव नहीं – प्रोफेसर पी के साहू

प्रोफेसर पी0 के0 साहू

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी0 के0 साहू ने व्याख्यान देते हुए कहा कि विकास स्वायत्तता के बिना संभव नहीं होता। यदि हम किसी से नियंत्रित होंगे तो वह हमारी स्वायत्तता पर बाधा उत्पन्न करेगा। स्वायत्तता का संप्रत्यय संकुचित होता है क्योंकि किताब पढ़ने से स्वायत्तता नहीं आती। किताब पढ़ना गाइडेड इंस्ट्रक्शन के अंतर्गत आता है।

प्रोफेसर साहू ने कहा कि औपचारिक शिक्षा एवं मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षा के दर्शन में जिस प्रकार का अंतर है उसी तरह से औपचारिक शिक्षक एवं मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षक में भी अंतर होता है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति शिक्षार्थी की स्वायत्तता पर बल देती है। आधुनिक शिक्षा में अनुभव आधारित शिक्षा विज्ञान का एक स्वरूप है।

प्रोफेसर साहू ने कहा कि सोच, विचार और सृजनता कभी नष्ट नहीं होती। उसका स्वरूप अत्यंत सूक्ष्म होता है। मानव जैसे जैसे विकास करता जाता है उसी के अनुरूप सूक्ष्म ज्ञान भी आगे बढ़ता जाता है। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रोफेसर साहू ने स्वावलंबन पर जोर देते हुए कहा कि जब तक हम स्वावलंबी नहीं होंगे विकास बाधित रहेगा क्योंकि दूसरे पर निर्भर रह कर संपूर्ण विकास संभव नहीं हो सकता।

प्रोफेसर साहू ने मुक्त शिक्षा पद्धति को वक्त की मांग बताते हुए कहा कि मुक्त शिक्षा प्रणाली अध्ययन में प्रबंधन को बढ़ावा देती है।

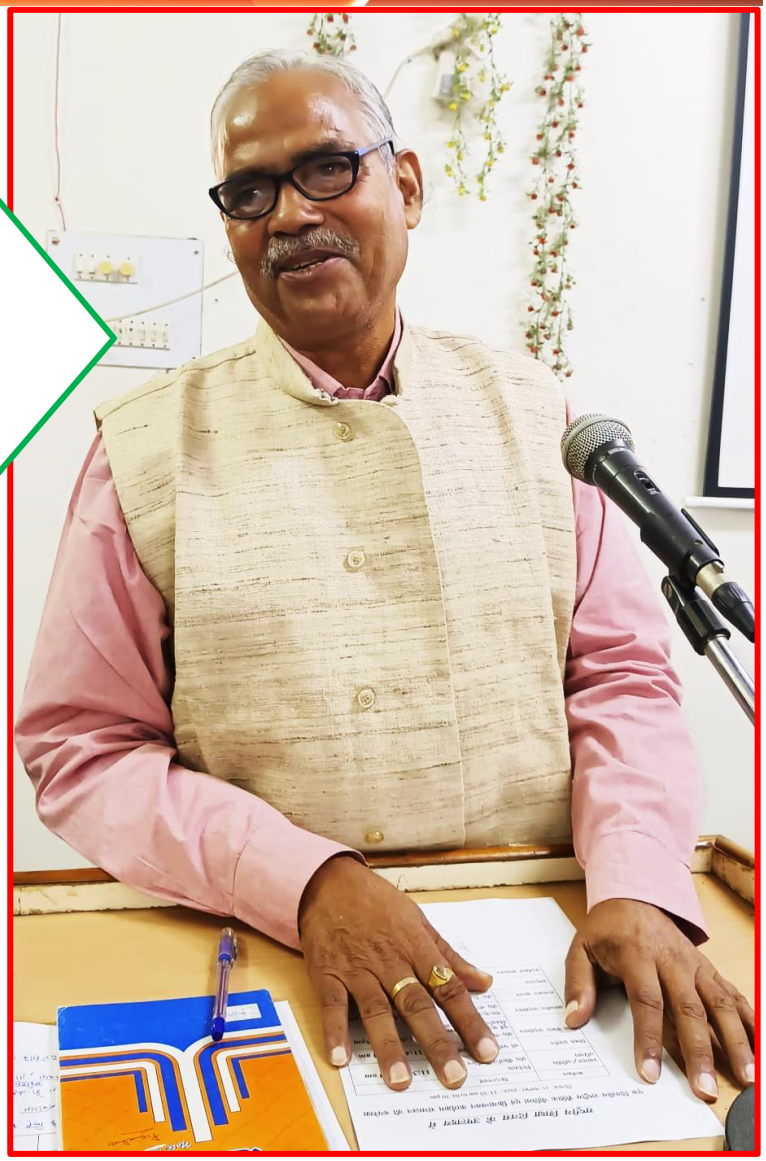

दूरस्थ शिक्षा पद्धति विकास की अनंत संभावनाएं – प्रोफेसर सीमा सिंह

मा0 कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह

अध्यक्षता करते हुए मा0 कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका मानना था कि शिक्षा समाज में हमें जीने का मौका देती है। शिक्षा मजबूती प्रदान करती है तथा ऊंचाई पर ले जाने में शिक्षा की सशक्त भूमिका है।

प्रोफेसर सिंह ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा पद्धति में छात्र हमसे दूर रहता है इसीलिए शिक्षक का प्रतिनिधित्व पाठ्य सामग्री करती है। पाठ्य सामग्री की संवेदनशीलता ही छात्र को दूरस्थ शिक्षा पद्धति में शिक्षक का बोध कराती है। उन्होंने कहा नई शिक्षा नीति में जड़ों से जुड़ने की बात कही गई है। दूरस्थ शिक्षा पद्धति में विकास की अनंत संभावनाएं हैं। हम अच्छे शिक्षार्थियों का निर्माण कर सकते हैं। मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से जीवन पर्यंत शिक्षा ग्रहण की जा सकती है।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय

राष्ट्रगान